School of Social Science

Certificate

I hereby declare that the short synopsis "राष्ट्रीय राजनीति में क्षेत्रीय दलों की भूमिका : उ० प्र० राज्य के विशेष संदर्भ में (वर्ष 2014 से वर्तमान तक)" [*Rashtriya Rajniti mein Kshetriya Dalon ki Bhumika: U. P. Rajya ke Vishesh Sandarbh Mein(Varsh 2014 se Vartman Tak)*] being submitted in partial fulfillment of the requirement for the degree of Doctor of Philosophy in Political Science under school of Social Sciences of U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj during the academic year 2022.

It is a bonafide record of original work carried out under the supervision of Dr. Ananda Nand Tripathi and has not been submitted in full or part to any other university or institute for a degree or diploma. Further, it is certified that the short synopsis is plagiarism-free and the repot has been submitted.

RAJ KUMAR

En. No. 2100603

Research Supervisor

Dr. Ananda Nand Tripathi

(Faculty of Political Science)

5/6/25

Pro. Santosha Kumar

(Director, School of Social Sciences)

05/06/25

Pro. P. K. Pandey

(Director, R&D Cell)

"राष्ट्रीय राजनीति में क्षेत्रीय दलों की भूमिका : उ० प्र० राज्य के विशेष संदर्भ में (वर्ष 2014 से वर्तमान तक)"

Rashtriya Rajniti mein Kshetriya Dalon ki Bhumika: U. P. Rajya ke Vishesh Sandarbh Mein (Varsh 2014 se Vartman Tak)

SHORT SYNOPSIS

Submitted in partial fulfillment of the requirement of the degree of

DOCTOR OF PHILOSOPHY IN POLITICAL SCIENCE

to

U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj

by

RAJ KUMAR

En 2100603

Under the Supervision of

Dr. ANANDA NAND TRIPATHI

Faculty of POLITICAL SCIENCE

School of Social Science

U.P. Rajarshi Tandon Open University

Shantipurm, (Sector –F) Phaphamau, Prayagraj – 211021

सारांश (Abstract):

वर्ष 2014 के बाद भारतीय राजनीति में एक ओर जहां राष्ट्रीय दलों, विशेषकर भारतीय जनता पार्टी (भा.ज.पा.) का वर्चस्व बढ़ा है, वहीं दूसरी ओर क्षेत्रीय दलों की भूमिका भी लगातार बहस का विषय रही है। उत्तर प्रदेश, जो संसद में सर्वाधिक सांसद भेजने वाला राज्य है, वहां क्षेत्रीय दलों — जैसे समाजवादी पार्टी (सपा), बहुजन समाज पार्टी (बसपा), और हालिया वर्षों में उभरते दलों — की रणनीतिक उपस्थिति ने राष्ट्रीय राजनीति को प्रभावित करने में अहम भूमिका निभाई है।

यह शोध उत्तर प्रदेश के विशेष परिप्रेक्ष्य में क्षेत्रीय दलों की बदलती राजनीतिक रणनीतियों, गठबंधन की राजनीति, जातीय और सामाजिक समीकरणों के उपयोग, तथा उनके राष्ट्रीय मुद्दों पर लिए गए रुख का आलोचनात्मक विश्लेषण करता है। 2014 से लेकर 2024 तक के आम चुनाव, उपचुनावों, और विधानसभाई गतिविधियों के आधार पर यह अध्ययन यह दर्शाता है कि भले ही क्षेत्रीय दलों की सीटों की संख्या में कमी आई हो, परंतु वे अभी भी नीति निर्धारण, जनमत निर्माण, और विपक्षी राजनीति में केंद्रीय भूमिका निभा रहे हैं।

अतः यह शोध इस निष्कर्ष की ओर संकेत करता है कि उत्तर प्रदेश के क्षेत्रीय दल न केवल राज्य की राजनीति को प्रभावित करते हैं, बल्कि उनके माध्यम से भारतीय लोकतंत्र में विविधता, प्रतिनिधित्व और सामाजिक न्याय के विचारों को भी जीवन मिलता है।

कीवर्ड (Keywords): उत्तर प्रदेश, क्षेत्रीय दल, राष्ट्रीय राजनीति, समाजवादी पार्टी, बहुजन समाज पार्टी, भारतीय जनता पार्टी, गठबंधन राजनीति, चुनावी राजनीति, सामाजिक न्याय, जातीय समीकरण, 2014–2024, लोकतंत्र, विपक्ष की भूमिका।

CONTENTS

S. No **Description**

1 Introduction

2 Literature Review

3 Description Broad Area

4 Objectives of the Study

5 Research Methodology

6 Expected Outcome of the Research

References

Plagiarism Report

1. प्रस्तावना

भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्रिक देश है। भारतीय संघ के विभिन्न राज्यों में होने वाली राजनीतिक प्रकिया राजनीति को प्रभावित करती रही है। राष्ट्रीय राजनीति का विकास हमारे देश में स्वत्रंता के समय से ही देखा जाने लगा। भारतीय सामाजिक संरचना के साथ ही साथ राजनीतिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य हमारे भारतीय समाज पर दिखने लगा और इस तरह हमारे देश में राष्ट्रीय राजनीति की नीव प्रथम आम चुनाव में देखने को मिली। राष्ट्रीय राजनीति के अर्थ से अभिप्राय राष्ट्रीय स्तर पर अर्थात देश के आम चुनाव को लेकर है और केन्द्रीय सरकार के गठन की पूरी प्रक्रिया से लिया जाता है। भारत एक विविधताओं भरा देश है, जिसमें विभिन्न भाषा धर्म, जाति, क्षेत्र को लेकर अपनी राजनीतिक लाभ साधने की कोशिश की जाती है, लम्बे समय तक एक दल के शासन ने भारतीय राजनीति में नीरसता उत्पन्न कर दिया था। धीरे धीरे यह स्पष्ट हो गया कि एक राजनीतिक दल विशाल भारत के विभिन्न प्रदेशों की समस्याओं का उचित समाधान नहीं प्रस्तुत कर सकता। इसलिए 1956 में राज्य पुनर्गठन आयोग की सिफारिश के आचार पर राज्यों का पुनरगठन कर दिया गया। उससे अनेक राज्यों में जनसंख्या, भाषा, धर्म एवं संप्रदायों की स्थिति, प्रशासनिक व्यवस्था, आर्थिक, राजनीतिक विशिष्ट समूहों में परिवर्तन आया। जिनकी अन्तः किया से क्षेत्रीय भावनाओं की उत्पत्ति हुई। यह विचार धारा क्षेत्रीय दलों के उदय का आधार बनी और इस तरह भारत में विभिन्न क्षेत्रीय दलों का उदय एवं विकास हुआ, जो राष्ट्रीय मुद्दों के समर्थन करने के साथ ही कुछ स्थानीय समस्याओं को सुलझाने का प्रयास करते रहे और इनका प्रभाव राष्ट्रीय राजनीति में देखने को मिला और साथ ही कुछ क्षेत्रीय दल केवल कुछ प्रदेशों तक ही सीमित रहे । राजनीतिक दल संगठित नागरिकों का ऐसा समुदाय है, जो एक राजनीतिक इकाई के रुप में कार्य करते है और अपने मतदान की शक्ति का प्रयोग कर सरकार को नियत्रित करना तथा अपनी सामान्य नीति की पूर्ति करना चाहते है। इस तरह भारत में

क्षेत्रीय दलों का विकास देखा जाएं तो स्वतंत्रता के पश्चात हुआ। 1985 के उपरान्त राष्ट्रीय क्षितिज पर कुछ क्षेत्रीय दल उभर कर भारतीय राजनीति में सक्रिय भूमिका के साथ सामने आए है। इन राजनीतिक दलों में असमगगढ परिषद, आकाली दल, सिक्किम संग्राम परिषद, मिजो नेशनल फ्रंट, बहुजन समाज पार्टी आदि है। राष्ट्रीय राजनीति में क्षेत्रीय दलों की भूमिका तब और स्पष्ट हुई कि जब 1989 में देवी लाल ने कांग्रेस के विकल्प के रुप गैर साम्यवादी दलों का संयुक्त गठबंधन राष्ट्रीय मोर्चा तथा 1996 में एच० डी० देवगौड़ा के प्रधानमंत्री बनवाने में आन्ध्रप्रदेश में तेलगू देशम (नायडू) के नेता चन्द्रबाबू नायडू ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। राष्ट्रीय राजनीति में 1996 से ही क्षेत्रीय दलों एवं भूमिका एवं शक्ति में तीव्रवृद्धि प्रारम्भ हो गयी थी। क्षेत्रीय दलों के महत्व को समझते हुए 13 वीं लोकसभा (1999) के निर्वाचन से पूर्व भारतीय जनता पार्टी ने सहयोगी दलों के साथ 05 मई 1999 को राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन एन० डी० ए० का गठन किया गया और सफलता प्राप्त की। कांग्रेस ने भी अपने सहयोगी दलों से मिलकर संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन यू० पी० ए० का गठन किया। 14 वी लोकसभा के निर्वाचनों (2004) में भी कांग्रेस और भाजपा दोनों ने ही क्षेत्रीय दलों के महत्व एवं भूमिकों को राष्ट्रीय राजनीति में स्वीकार किया ।

2. साहित्य समीक्षा

रजनी कोठारी 'भारत में राजनीति' इस पुस्तक में भारतीय राजनीतिक संरचना का विस्तृत अध्ययन करने को मिला जो वर्तमान समय में राजनीति को कौन-कौन तत्व मुख्य रुप से प्रभावित करने का प्रयास करते है और भारतीय राजनीति के प्रति समझ विकसित करने से सम्बन्धित तथा राजनीतिक संरचना में राजनीतिक दलों की भूमिका और राजनीतिक प्रकृति शोधार्थी के लिए पुस्तक शोध विषय से सम्बन्धित है।

चन्द्रप्रकाश भावरी 'भारत मे लोकतंत्र इस पुस्तक में भारतीय लोकतंत्र का विस्तृत अध्ययन किया गया है जिसमें लोकतंत्र की व्यावहारिक शैली का विस्तृत उल्लेख किया गया है। इसमें लोकतंत्र और राजनीतिक दलों के स्वरुप का अध्ययन किया गया है। इस पुस्तक में गठबंधन की सरकारों के कार्य एवं नीतियों के बारे में अध्ययन किया गया है। क्षेत्रीय राजनीतिक दलों की संक्रिय भूमिका का भी इस पुस्तक में अध्ययन किया है। इस पुस्तक में यह भी बताया गया है कि क्षेत्रीय दल किस प्रकार अपनी मुख्य राजनीतिक भूमि से जुड़े रहते है।

सत्यपाल मलिक 'भारतीय राजनीति और राजनीतिक दल समस्या और संभावनाएं' इस पुस्तक में भारतीय राजनीति का विस्तृत वर्णन किया गया है और भारतीय शासन में राजनीतिक दलों के कार्यों की प्रकृति एवं उनकी पहचान और संभावनाओं के बारे में अध्ययन किया गया है। कि 90 के दशक में भारतीय राजनीति में कैसे क्षेत्रीय दलों के प्रभाव में वृद्धि हुई।

3. विस्तृत वर्णनात्मक क्षेत्र

भारत की राष्ट्रीय राजनीति में क्षेत्रीय दलों की भूमिका सदैव महत्वपूर्ण रही है। उत्तर प्रदेश जैसे प्रमुख राज्य में क्षेत्रीय दल–जैसे समाजवादी पार्टी, बहुजन समाज पार्टी और राष्ट्रीय लोक दल–ने सामाजिक न्याय, पिछड़े वर्गों और दलितों की राजनीति को मजबूती दी है। 2014 के बाद भाजपा के उभार ने भले ही इनके जनाधार को चुनौती दी हो, परंतु ये दल गठबंधन, आंदोलन और क्षेत्रीय मुद्दों के माध्यम से आज भी राष्ट्रीय राजनीति को प्रभावित कर रहे हैं।

यह अध्ययन 2014 से 2024 तक उत्तर प्रदेश में क्षेत्रीय दलों की रणनीतियों, प्रभाव, और उनकी राष्ट्रीय राजनीति में भूमिका का विश्लेषण करता है। यह दर्शाता है कि भले ही सत्ता में इनकी हिस्सेदारी कम हुई हो, परंतु विचारधारा, प्रतिनिधित्व और लोकतांत्रिक विविधता के लिहाज़ से इनकी भूमिका आज भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

4. **शोध अध्ययन का उद्देश्य**

राष्ट्रीय राजनीति में क्षेत्रीय दलों की विचारधारा का अध्ययन करना। राष्ट्रीय राजनीति में क्षेत्रीय दलों की भूमिका का मूल्यांकन करना। राष्ट्रीय राजनीति में क्षेत्रीय दलों के परिणाम स्वरूप समाज के निम्नतम स्तर पर राजनीतिक जागरुकता का अध्ययन करना । राष्ट्रीय राजनीति में क्षेत्रीय दलों के प्रभाव का अध्ययन करना ।

5. **शोध प्रविधि**

शोध ऐतिहासिक विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित होगा। इस अध्ययन के दौरान मूलतः प्राथमिक ऑकड़ो का अध्ययन किया जाएगा। आवश्यकता पड़ने पर द्वितीयक स्त्रोतों का भी प्रयोग किया जाएगा। द्वितीयक स्त्रोत के अंतर्गत पत्र पत्रिकाओं में छपे लेखों तथा समाचार पत्रों का भी अध्ययन किया जाएगा।

6. **संभावित निष्कर्ष (Expected Outcomes)**

उत्तर प्रदेश की राजनीति में क्षेत्रीय दलों की भूमिका ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण रही है। समाजवादी पार्टी, बहुजन समाज पार्टी और अन्य स्थानीय दलों ने सामाजिक न्याय, जातीय समानता, और हाशिए पर खड़े वर्गों की राजनीतिक भागीदारी को मुखर रूप से सामने लाया है। हालांकि 2014 के बाद भारतीय जनता पार्टी के प्रबल उदय और केंद्रीय नेतृत्व की मज़बूती ने इन दलों की राजनीतिक ताकत को सीमित किया है, लेकिन यह कहना एकांगी होगा कि क्षेत्रीय दल अप्रासंगिक हो गए हैं।

वास्तव में, इन दलों ने अपनी रणनीति में लचीलापन दिखाया है–गठबंधन की राजनीति, क्षेत्रीय मुद्दों को राष्ट्रीय मंच पर लाने की कोशिश, और सामाजिक समीकरणों के पुनर्गठन के माध्यम से वे निरंतर राजनीतिक संघर्ष में सक्रिय हैं। इनकी भूमिका केवल चुनावी जीत-हार तक

Ri Kr

सीमित नहीं है, बल्कि ये दल भारतीय लोकतंत्र की विविधता, संघवाद, और बहु-आवाज़ीय प्रतिनिधित्व के प्रतीक हैं।

शोध से यह निष्कर्ष निकलता है कि भले ही राष्ट्रीय राजनीति में क्षेत्रीय दलों की सीटें और प्रत्यक्ष प्रभाव घटा हो, परंतु नीति निर्माण, सामाजिक विमर्श और लोकतांत्रिक संतुलन के संदर्भ में इनकी उपस्थिति अब भी अत्यंत प्रासंगिक है। उत्तर प्रदेश जैसे निर्णायक राज्य में इन दलों की गतिविधियाँ आने वाले वर्षों में भी भारतीय राजनीति को दिशा देने में सक्षम रहेंगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. कोठारी, रजनी, भारत में राजनीति, नई दिल्ली: ब्लैक स्वान पब्लिकेशन, 2014
2. भांभरी, चन्द्रप्रकाश, भारत में लोकतंत्र, दिल्ली: राष्ट्रीय पुस्तक न्यास भारत, 2016
3. सिंह, राय, महेन्द्र प्रताप हिमांशु, राजनीतिक प्रणाली, संरचना, नीति और विकास, नई दिल्ली: हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, 2014
4. हर्ट मैन, एच. पालिटिकल पार्टीज इन इंडिया लंदन आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस
5. मलिक, सत्यपाल, भारतीय राजनीति और राजनीतिक दल समस्या और संभावनाएं, नई दिल्ली: राष्ट्रीय पुस्तक न्यास भारत
6. पालोम्बरा, जोसफ ला एण्ड वीनर एम पालिटिकल पार्टीज एण्ड पालिटिकल डवलपमेन्ट, लंदन: यूनिवर्सिटी प्रेस, 1966
7. वाल्टन, केनेच, थ्योरी ऑफ इन्टरनेशनल पालिटिक्स, कोलम्बिया यूनिवर्सिटी, 1989
8. राय, अनिल, शैडो पालिटिक्स, रीडिंग रुम्स, 2019

Ri Kr

DrillBit

The Report is Generated by DrillBit Plagiarism Detection Software

Selected Language | **Hindi**

Submission Information

Author Name	Raj Kumar
Title	Rashtriya Rajniti mein Kshetriya Dalon ki Bhumika: U. P. Rajya ke Vish esh Sandarbh Mein (Varsh 2014 se Vartman Tak)
Paper/Submission ID	3730375
Submitted by	trivikramtiwari@gmail.com
Submission Date	2025-06-04 15:32:02
Document type	Synopsis

Result Information

Similarity	**3%**

A Unique QR Code use to View/Download/Share Pdf File

DrillBit

The Report is Generated by DrillBit Plagiarism Detection Software

Selected Language Hindi

Submission Information

Author Name	Raj Kumar
Title	Rashtriya Rajniti mein Kshetriya Dalon ki Bhumika: U. P. Rajya ke Vishesh Sandarbh Mein (Varsh 2014 se Vartman Tak)
Paper/Submission ID	3730375
Submitted by	trivikramtiwari@gmail.com
Submission Date	2025-06-04 15:32:02
Document type	Synopsis

Result Information

Similarity **3%**

A Unique QR Code use to View/Download/Share Pdf File

Ri Kr

DrillBit

DrillBit Similarity Report

3	2	A	A-Satisfactory (0-10%)
SIMILARITY %	MATCHED SOURCES	GRADE	B-Upgrade (11-40%)
			C-Poor (41-60%)
			D-Unacceptable (61-100%)

LOCATION	MATCHED DOMAIN	%	SOURCE TYPE
1	Paper Submitted to Mahatma Gandhi Kashi Vidyapeeth, Varanasi	3	Student Paper
2	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	<1	Publication